आई•आर•सी:एस पी: 36–2017

भारतीय सड़क कांग्रेस के प्रकाशनों के प्रारुप के संबंध में दिशा निर्देश

(प्रथम संशोधन)

प्रकाशक
भारतीय सड़क कांग्रेस
कामा कोटी मार्ग
सैक्टर–6 आर के पुरम
नई दिल्ली–110022

मूल्य:रु–40(पैकिग व डाक खर्चो सहित)

प्रथम **प्रकाशक : जनवरी,1991**
पुनः मुद्राक : सितम्बर, 2002
पुनः मुद्राक : जून,2009
प्रथम संशोधन : अगस्त,2017

(सर्वधिकार सुरक्षित : भारतीय सड़क कांग्रेस की अनुमति के बिना इस ग्रंथ के किसी भी रुप में प्रतिलिपि, अनुवाद व प्रसारित करना पूर्णःनिषिद्ध)

विषय सूची

क्रम संख्या **विवरण** **प्रष्ठ संख्या**

हाईवेज स्पेसिफिकेशन्स व स्टैडर्डस समिति के सदस्य

1. **परिचय**
2. **शीर्षक**
3. **विषय सूची की तालिका**
4. **एपेक्स समिति रचना**
5. **प्रस्तावना**
6. **संकेत**
7. **चिन्ह**
8. **परिचय**
9. **अनुच्छेद एंव संख्यांकन**
10. **तालिकायें**
11. **उदाहरण**
12. **माप की इकाई**
13. **पारिभाषिक शब्द**
14. **संदर्भ**

भारतीय सड़क कांग्रेस के प्रकाशनों के प्रारुप के संबंध में दिशा निर्देश

1. परिचय

1.1 यह आवश्यक है कि भा.स.काँ. द्वारा विभिन्न ग्रथों जैसे मानकों,विशेष उल्लेखों,संहिता,नियमावली,दिशा निर्देश का एक जैस प्रारुप प्रकाशित किया जाना और सभी ग्रंथ अंतविजय में संगत होने चाहिए। इन ग्रंथों के प्रारुप से संबंधित दिशा निर्देश तब तक इनके हटने का कारण नहीं बताया जाएगा ।

1.2 भारतीय सड़क कांग्रेस ग्रंथों की भाषा अंग्रेजी है। तथ्यों का प्रस्तुतीकरण तृतीय पक्ष में होना चाहिए वर्तनी के लिए प्रचलित ऑक्सोर्ड के शब्दकोश का प्रयोग करें।

1.3 ग्रंथों में इनके मुख्य विषय सें संबंधित आवश्यक तकनीकी प्रवाधानों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। जहां तक संभव हो, पुनरावृत्ति से बचना चाहिए ओर प्रति–संदर्भ की कार्यनीति अपनायी जायें।

1.4 पहली बार भारतीय सड़क कांग्रेस मानकों के प्रारुप के संबंध में दिशा निर्देश जनवरी 1991 में प्रकाशित हुए तथा इनके पुनर्विलोकन व सुधार की आवश्कता महसूस की गई। सर्वप्रथम, अगस्त 2017 में इस ग्रंथ का संशोधित मसोदा सचिवालय में श्री राहुल पाटिल, उपनिदेशक(तकनिकी), I R C ने धन प्रकाश गुप्ता, महानिदेशक(सड़क विकास) एंव अतिरिक्त सचिव(सेवा निवृत्त),

सड़क परिवहन एंव राजमार्ग मंत्रालय के सहयोग से तैयार किया । तत्पश्चात एच•एस•एस, बी•एस•एस, व जी•एस•एस समितियों की दिनाँक———— को होने वाली बैठक में प्रस्तुत किया गया। तदानुसार, ड्राफ्ट दिशा निर्देश को इन समितियों के द्वारा दिये गये अवलोकनों के परिप्रेक्ष्य और भी परिष्कृत किया गया। परिष्कृत मसौदा दिनाँक———— की कार्यकारी समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया और यह मसौदा अनुमोदित हो गया। अंततः यह मसौदा दिशा निर्देश दिनाँक———— को बंगलौर में हुई परिषद की बैठक में अनुमोदित हो गया। इस प्रकाशन का हिन्दी अनुवाद श्रीमती भारती फुलार, निजी सचिव, भारतीय सड़क कांग्रेस ने किया।

1.5 आगामी प्रारुप सभी समितियों द्वारा अपनाया जाएगा। ग्रंथों जैसे मानकों/विशेष उल्लेखों/संहिता/नियमावली/दिशा निर्देश/ विशेष प्रकाशनों का अंतर्विजय संबंधित समितियों द्वारा निघारित किया जाएगा जो कि सूचिद्ध प्रारुप में विशेष मद की प्रयोज्यता पर निर्भर है

2. शीर्षक

शीर्षक छोटा हो और वह ग्रंथ के विषय क्षेत्र का सूचक हो। समिति ग्रंथों के रचना की आंभिक अवस्था में शीर्षक पर विचार करें । जब तक कोई गहन कारण न हो, शीर्षक की व्याख्या के लिए संक्षिातीकरण सें बचना चाहिए।

3. विषय सूची की तालिका

हर ग्रंथ की विषय सूचि की तालिका नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार प्रदान करानी चाहिए।

विषय सूची की तालिका

अध्याय/खण्ड़ अध्याय का शीर्षक उपखण्ड़/
खण्ड़ या उपखण्ड़ प्रष्ठ क्र•
अगर उपयुक्त हो तो एच•एस•एस, बी•एस•एस, व जी•एस•एस के रुप में रचना

प्रस्तावना
संक्षिप्तीकरण
संकेत चिन्ह
1.परिचय
2.———
2.1———
2.2———
3.———
3.1———

तलिकाओं की सूची

तलिका –1 : ———
तलिका –2 : ———
तलिका –3 : ———

रेखा–चित्रों की सूची

रेखा–चित्र–1: ———
रेखा–चित्र–2: ———
रेखा–चित्र–3: ———

चित्रों की सूची

चित्रों–1: ———
चित्रों–2: ———

प्ररिशिष्ट

प्ररिशिष्ट–1: ———
प्ररिशिष्ट–1 का बंधन A
प्ररिशिष्ट–1 का बंधन B
प्ररिशिष्ट–2 संदर्भ

4. एपेक्स समिति रचना

हर ग्रंथ में एपेक्स समिति, हाइवे स्पेसिफिकेशन्स एंड स्टेडर्डस समिति, ब्रिज स्पेसिफिकेशन्स एंड स्टेंडर्ड समिति व जनरल स्पेसिफिकेशन्स एंड स्टेंडर्डस समिति के सदस्यों की सूची होगी। जब तक इसके हटने का कारण न बनाया जाये। ग्रंथ के अनुमोदन के समय समिति के जो सदस्य थे, उनके नाम का उल्लेख किया जाएगा।

5. प्रस्तावना

इसके निम्नोकित का उल्लेख किया जाना चाहिए।

(क) ग्रंथ के उद्‌गम का अनुरोध।

(ख) ग्रंथ की तैयारी से संबंधित संक्षिप्त इतिहास, समिति, उपसमिति तथा विशिष्ट कार्य के लिए गठित पैनल की रचना। समिति की सदस्यता ग्रंथ समाप्ति की तिथि पर आधारित होगी। I R C सचिवालय सामान्यतः समिति के सदस्यों की सूची से सम्बन्धित कार्य देखेगी।

(ग) ग्रंथ के मुख्य लेखकों व उन संस्थाओं का आभार प्रकट करना जिन्हें समिति का संयोजक प्रस्तावित करे।

(घ) ग्रंथ में कोई अन्य विशिष्टता।

(ड.) कुछ ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य जो ग्रंथ के लिए उपयोगी है। जैसे जिन विषयों पर ग्रंथ आधारित हैं उनके सूत्र अथवा सम्बधित मानक। इनकें I R C के मानक व अन्य पूर्व प्रकाशि मानकों का संदर्भ भी दिया जाना चाहिए।

6. संकेत

ग्रंथ में सकेतों का प्रयोग उपलब्ध व प्रचलित भारतीय सड़क कांग्रेस के मानक व अन्य भारतीय मानक के अनुसार होना चाहिए। अन्यथा भारत में व्याप्त व्यापारिक प्रचलन व अंतर्राष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखते हुए संकेतों का प्रयोग करना चाहिए।

7.चिन्ह

चिन्ह का प्रयोग I R C : 71–1977 के अनुसार है।

8. परिचय

इनमें स्पष्ट स्प से ग्रंथ का उधेश्य, अभिप्रय,जिन क्षेत्रों का समावेश किया गया है तथा विभिन्न शीर्षकों व विषयों को विभिन्न अध्याय व अनुभागों में दर्शाया गया है, का वर्णन करना चाहिए। ग्रंथ की विषय वस्तु का सीमा निधारित भी करना चाहिए। संज्ञयात्मक स्थिति से बचने के लिए व अभिप्राय की स्पष्टता के लिए यह उपयोगी होगा कि ग्रंथ की क्या सीमाए हैं व इसमें किन बातों का उल्लेख नंही किया गया है, का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया जाए।

9. अनुच्छेद एंव संख्यांकन

संदर्भ देने में सुविधा हो इसके लिए आवश्यक है कि ग्रंथ मूल भाग में भारतीय व अंतर्राष्ट्रीय अंकों के अनुसार संख्यांकन दिए जाए व उनका प्रतिभाग भी किया जाए।

संख्यांकन के लिए ग्रंथ में निम्नलिखित अनुभाग होने चाहिए।

(1) मद–ग्रंथ की विषय का मुख्य भाग लगातार अंकों के प्रयोग से करना चाहिए।

(2) धारा–मद का प्रतिभाग धाराओं का अंकन दो अंको में होना चाहिए। तथा अंकों के बीच में बिंदू (फल स्टाप) होना चाहिए। इसमें पहला अंक Item(मद) का होना चाहिए तथा दूसरा लगातार चलने वाली clause (धारा) का होना चाहिए।

(3) उप–धारा : की विषय वस्तु जिन्हें विशेष महत्व देना हो। उप धारा का अंकन तीन अंकों में होना चाहिए। जिन्हें बिंदू (फल स्टाप) से अलग–2

ककिया जाना चाहिए। पहले दो अंक मद (Item) व तृतीय उप धारा (Sub-Clause) के होने चाहिए जो लगातार क्रम से चलता रहता है।

(4) उप उप धारा : यह उप उप धारा के विभाजन के अन्तर्गत आता है। उप उप धारा का संख्यांकन अंकों में किया जाता है, जिनमें प्रत्येक अंक के बीच में बिंदू(फल स्टाप) आता है। इसमें पहले तीन अंक क्रमशः मद,धारा व उप धारा के आते है तथा अंतिम अंक उप उप धारा का आता है जो क्रम से लगातार चलता है। मदों का संख्यांकन करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जिन तथ्यों या विचारों का स्तर समान है, वे उसी स्तर में दर्शाए जाए। एक ही तथ्य या विचार को अनावश्यक रुप से विभिन्न उप धाराओं में दर्शाना या विभाजन करना उचित नहीं है।

10. <u>तालिकायें</u>

तालिकाओं का प्रस्तुतीकरण वहाँ करना चाहिए जिससे बार–2 आँकड़ों को न दोहराना पड़े व परस्पर सम्बन्धें को ठीक प्रकार से दर्शाया जा सके। तालिकाओं का स्वरुप औपचारिक व अनौपचारिक दो प्रकार से हो सकता है। जहां पर आंकडों की संख्या बहुत अधिक हो तथा जो एक अलग इकाई के रुप में जिसका पुस्तक में संदर्भ दिये जाने की संभावना हो वहां पर औपचारिक तालिका का प्रयोग करना चाहिए। जहां पर आंकड़ों की संख्या कम हो तथा जो मूलग्रंथ का एक अभिन्न हिस्सा हो, वंहा अनौपचारिक तालिका का प्रयोग करना चाहिए।

जंहा कहीं भी तालिका की विषय वस्तु किसी पूर्ण प्रकाशित ग्रंथ/ I R C पुस्तक या किसी अन्य जगह से ली गई हों वहां

उस सूत्र का स्पष्ट रुप से उल्लेख करना चाहिए तथा आवश्यक अनुमति भी लेनी चाहिए।

औपचारिक तालिकाओं में सबसे ऊपर शीर्षक बड़े अक्षरों में तथा उनके अंकों में क्रम संख्या भी देनी चाहिए। परिशिष्टों में भी तालिकाओं में इस बात का पालन करना चाहिए। जब तक तालिकाओं की विषय–वस्तु में आपस में बहुत गहरा सम्बन्ध न हो तथा उन्हें एक ही तालिका में प्रस्तुत करना सम्भव न हा तब तक तालिकाओं का समूहीकरण जैसे तालिका I-A तथा I-B का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

एक गहरी पंक्ति से औपचारिक तालिका को मूल ग्रंथ से अलग करना चाहिए तथा यह गहरी पंक्ति तालिका के प्रांरभ से पहले तथा समाप्ति के बाद देनी चाहिए।

यह एक समान्य नियम है कि जंहा तक संभव हो तालिका की प्रस्तुति वहां करनी चाहिए जंहा उसका प्रथम संदर्भ आ रहा है। तालिका की प्रस्तुति अनुच्धेद के मध्य में भी नहीं करनी चाहिए।

कभी–2 औपचारिक तालिकाओं के साथ फुट नोट लगाना आवश्यक हो जाता है। ऐसे में फुट नोट तालिका के नीचे आ रही मोटी लाईन के ऊपर तथा थोड़ी जगह छोड़कर लिखनी चाहिए। फुट नोट का संदर्भ देने के लिए तारक चिन्ह या अन्य कोई छोटा चिन्ह देना चाहिए। पंरतु जंहा कहीं फुट नोट की संख्या अधिक हो वंहा लगातार एक क्रम से ऊपर की ओर की ओर लिखे जाने वाले अंकों का प्रयोग करना चाहिए।

11. <u>उदाहरण</u>

आकृति, मानचित्र, ग्राफिक्स व चित्र के माध्यम से विषय–वस्तु व्याख्या करना या समझना आसान हो, का प्रयोग करना चाहिए।

उदाहरण दो प्रकार से प्रस्तुत किए जा सकते हैं। ; यथाः

(क) रेखा चित्र

(ख) बिंदू चित्र

(क) <u>रेखा चित्र</u> : यह सफेद मोटे कागज पर अथवा ट्रेसिंग कपड़े पर काली स्याही से अंकित होना चाहिए।

रेखा चित्र को समान्यतः दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(अ) ऐसी आकृति जो ग्रंथके आकार में ही समाहित हो।

(ब) ऐसी लंबी प्लेट्स जो सामान्यः दीर्घ आकार के पेपर में प्रस्तुत हो पाती है।

आकृतिः आकृति में आने वाली सामग्री (अंक,शब्द आदि) का माप 10 प्वॉइट (लगभग 1.5 की ऊंचाई) होनी चाहिए। इस प्रकार लिखित सामग्री का आकार इस प्रकार से होना चाहिए जिसका आकार कम होने पर भी वह 1.5 mm का हो तथा पठनीय हो । एक पृष्ठ का मुद्रित क्षेत्र 170 mm लम्बाई में तथा 108 mm चोड़ाई में होना चाहिए इस प्रकार अन्ततः आकृति समान्यतः 170 mm x 100 mm से अधिक नहीं होना चाहिए।

पलेट्स : यह श्रेष्ठ होगा की जो चौड़ाई में फैली हुई पलेट्स इस प्रकार से बनाई जाए जो 190 mm के गुणज में हो। पलेट्स में लिखे जाने वाले शब्दों का आकार कम करने पर भी वह 1.5 mm से कम न हो । उदाहरण के लिए अगर चौड़ाई 380 mm है तो अक्षरों का आकार 3 mm होना चाहिए। अक्षरों की मोटाई इस प्रकार से होनी चाहिए कि वह आकार कम करने पर भी ठीक से नजर आए। शीर्षक दाई ओर के कोने पर इस प्रकार के अक्षरों में होनी चाहिए जो कि आकार छोटा करने पर भी कम से कम 3 mm के आकार का रहे।

प्लेट के शीर्षक के नीचे की ओर मापक(स्केल)लगाना चाहिए ताकि आकार कम करने पर भी मापक व आकृति का संम्बध खत्म ना हो । यह उल्लेख करने से बचना चाहिए–यथा 1/100 का मापक (1cm=1m) क्योंकि ऐसा करने से जब प्लेट का छाया चित्र लेने के बाद जब उसका आकार कम होगा तो वह गलत हो जाएगा।

रंगीन स्याही का प्रयोग नंही किया जाए।जंहा पंक्तियों में अंतर दिखता हो तो वंहा रंगीन स्याही की बिंदु वाली लाईन या श्रृखला वाली लाईन का उपयोग करें।

अगर आकृतियों को सुंदर रुप में प्रस्तुत करना है तो चतुर्भुज की जगह त्रिभुज का प्रयोग ग्राफिक्स में करें। चतुर्भुज का अनुपात 3X5 या 3X4 को प्राथमिकता दें।

ग्राफ की प्रभावशाली प्रस्तुति इस बात पर निर्भर है कि ग्राफ के अंतर्गत आने वाली पंक्तियों की माप कैसी है व मोटाई कितनी है।

मुख्य वक्र रेखा को मोटे आकार में प्रस्तुत करें। अगर एक ही ग्राफ में कई व्रक रेखाएं दर्शाई जा रही है तो उनकी मोटाई उन ग्राफ से कम होनी चाहिए जिसमें एक ही वक्र रेखा दर्शाई जा रही है आपसी संम्बध प्रदर्शित करने वाली रेखाएं मोटाई में कम होनी चाहिए। मुख्य संदर्भ पंक्तियाँ प्रभावशाली होनी चाहिए। यह उपयुक्त होगा